रविवार 11 अप्रैल, 2021

विषय — क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठः **भजन संहिता 91 : 9, 10**

"हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है, इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु: ख तेरे डेरे के निकट आएगा॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 91 : 11-16**

11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
13 तू सिंह और नाग को कुचलेगा, तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा।
14 उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।
15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।
16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 1, 26 (*से*:), 27, 28 (*से*:), 31 (*से 1st* .)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।

28 और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. भजन संहिता 68 : 20

20 वही हमारे लिये बचाने वाला ईश्वर ठहरा; यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है॥

3. यूहन्ना 8: 1-11

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा।
4 हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।
5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?
6 उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।
7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उस को पत्थर मारे।
8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।
9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।
10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।
11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना॥

4. रोमियो 6: 12-14, 23

12 इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो।

13 और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो॥
23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

5. यूहन्ना 9: 1-3, 6, 7

1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?
3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।
6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

6. मत्ती 5 : 2, 17, 18

2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।
18 लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

7. प्रेरितों के काम 4 : 33

33 और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

8. प्रेरितों के काम 5: 12, 14-16

12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।
14 और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।)

15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस
आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए।
16 और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं का
ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे॥

9. प्रेरितों के काम 20 : 7-12

7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था,
उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर
तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण
उसी में है।
11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह
चला गया।
12 और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

10. प्रेरितों के काम 26 : 8

8 जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी
जाती?

11. लूका 1 : 37

37 क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरिहत नहीं होता।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 521 : 5-6

जो कुछ भी बनाया गया है वह भगवान का काम है, और सब अच्छा है।

2. 519 : 3-6

अन्यथा, वह कैसे हो सकता है, क्योंकि आध्यात्मिक निर्माण उनके अनंत आत्म-नियंत्रण और अमर ज्ञान का प्रकोप था?

3. 525 : 20-29

सब कुछ भगवान ने अच्छा या योग्य बनाया। जो कुछ भी वैधता या द्वेषपूर्ण है, उसने नहीं बनाया, - इसलिए यह असत्य है। उत्पत्ति के विज्ञान में हमने पढ़ा कि उसने वह सब कुछ देखा जो उसने बनाया था, "और देखा तो बहुत अच्छा था।" शारीरिक इंद्रियां अन्यथा घोषित करती हैं; और अगर हम सत्य के रिकॉर्ड के रूप में त्रुटि के इतिहास के लिए एक ही ध्यान देते हैं, तो पाप और मृत्यु का पवित्र अभिलेख भौतिक इंद्रियों के झूठे निष्कर्ष का पक्षधर है। पाप, बीमारी और मृत्यु को वास्तविकता से रहित समझना चाहिए क्योंकि वे अच्छे, ईश्वर के हैं।

4. 472 : 9-12

बीमारी, पाप, और मृत्यु, धार्मिक होने के नाते, परमेश्वर में उत्पन्न नहीं होते हैं और न ही उनकी सरकार के होते हैं। उनका कानून, ठीक ही समझा जाता है, उन्हें नष्ट कर देता है। यीशु ने इन कथनों के प्रमाण प्रस्तुत किए।

5. 11 : 9-21

क्रिश्चियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है। अब, अतीत की तरह, ये शक्तिशाली कार्य अलौकिक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च प्राकृतिक हैं। वे इमैनुअल, या "भगवान हमारे साथ है," का संकेत हैं — मानवीय चेतना में मौजूद एक दिव्य प्रभाव और खुद को दोहराते हुए, अब जैसा कि वादा किया गया था, आ रहा है,

> कि बन्धुओं को छुटकारे का और
> अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार
> प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।

6. 206 : 26-31

भगवान ने बीमारी और मौत भेजने के बजाय, उन्हें नष्ट कर दिया, और प्रकाश अमरता में लाया। सर्वव्यापी और अनंत मन ने सभी को बनाया और सभी को शामिल किया। यह मन गलतियाँ नहीं करता है और बाद में उन्हें सही करता है। ईश्वर मनुष्य को पाप करने, बीमार होने या मरने के लिए प्रेरित नहीं करता है।

7. 302 : 8-13, 19-24

जब भगवान सब और अनंत काल के हैं, तब यह असंभव है कि मनुष्य को वास्तविक रूप से खोना चाहिए। यह धारणा कि मन पदार्थ में है, और तथाकथित सुख और पीड़ा, जन्म, पाप, बीमारी, और पदार्थ की मृत्यु, वास्तविक हैं, एक नश्वर विश्वास है; और यह विश्वास वह सब है जो कभी खो जाएगा।

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

8. 207 : 10-14

हमें सीखना चाहिए कि बुराई अस्तित्व का भ्रामक और असत्य है। बुराई सर्वोच्च नहीं है; अच्छा असहाय नहीं है; न तो पदार्थ के प्राथमिक, और आत्मा के कानून के तथाकथित कानून हैं। इस पाठ के बिना, हम पूर्ण पिता, या मनुष्य के दिव्य सिद्धांत की दृष्टि खो देते हैं।

9. 147 : 32-6

यीशु ने कभी भी बीमारी को खतरनाक या चंगा करने की बात नहीं की। जब उनके छात्र उनके पास एक ऐसा मामला लाए, जिसे वे ठीक करने में विफल रहे, तो उन्होंने उनसे कहा, "ओ विश्वासहीन पीढ़ी," यह कहते हुए कि चंगा करने की अपेक्षित शक्ति मन में थी। उन्होंने कोई दवा नहीं निर्धारित की, भौतिक कानूनों के लिए कोई आज्ञाकारिता का आग्रह नहीं किया, लेकिन उनके लिए प्रत्यक्ष अवज्ञा का कार्य किया।

10. 476 : 32-4

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया।

11. 26 : 14-18, 28-30

ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

हमारे मास्टर ने कोई विचार, सिद्धांत या विश्वास नहीं सिखाया। यह सभी वास्तविक लोगों का दिव्य सिद्धांत था जो उन्होंने सिखाया और अभ्यास किया।

12. 231 : 20-29

अपने आप को पाप से श्रेष्ठ बनाने के लिए, क्योंकि परमेश्वर ने आपको इससे श्रेष्ठ बनाया है और मनुष्य को नियंत्रित करता है, सच्चा ज्ञान है। पाप से डरने के लिए प्रेम की शक्ति और ईश्वर के मनुष्य के संबंध में होने के दिव्य विज्ञान को गलत समझना है, - अपनी सरकार पर संदेह करना और उसकी सर्वशक्तिमान देखभाल पर अविश्वास करना। अपने आप को बीमारी और मौत से बेहतर पकड़ना भी उतना ही बुद्धिमानी है, और ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार है। उनसे डरना असंभव है, जब आप भगवान को पूरी तरह से समझ लेते हैं और जानते हैं कि वे उनकी रचना का हिस्सा नहीं हैं।

13. 494 : 30-3

हमारे मास्टर ने शैतानों (बुराइयों) को बाहर निकाल दिया और बीमारों को चंगा किया। उनके अनुयायियों के बारे में यह भी कहा जाना चाहिए, कि वे भय और सभी बुराईयों को अपने और दूसरों से दूर करते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। जब भी मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होगा, ईश्वर मनुष्य के माध्यम से बीमारों को चंगा करेगा। सत्य ने त्रुटि को अब बाहर कर दिया जैसा कि उन्नीस सदियों पहले हुआ था।

14. 495 : 6-16

यदि बीमारी सच है या सत्य का विचार है, तो आप बीमारी को नष्ट नहीं कर सकते हैं, और यह कोशिश करना बेतुका होगा। तब बीमारी और त्रुटि को वर्गीकृत करें जैसा कि हमारे मास्टर ने किया था, जब उन्होंने बीमारों की बात की थी, "जिसे शैतान ने बाध्य किया," और मानव विश्वास पर कार्य करने वाली सत्य की जीवन-शक्ति में त्रुटि के लिए एक संप्रभु मारक पाते हैं, एक शक्ति जो जेल के दरवाज़े को इस तरह से खोलती है, और बंदी को शारीरिक और नैतिक रूप से मुक्त करती है।

जब बीमारी या पाप का भ्रम आपको झकझोरता है, ईश्वर और उसके विचार के प्रति दृढ़ रहना अपने विचार में पालन करने के लिए उसकी समानता के अलावा कुछ भी अनुमति न दें।

15. 391 : 7-9

रोग के उद्दीप्त या उन्नत चरणों में अंधे और शांत प्रस्तुत करने के बजाय, उनके खिलाफ विद्रोह में वृद्धि।

16. 390 : 20-26

विचार पर बढ़ने के लिए पाप या बीमारी का कोई दावा नहीं है। इसे एक घृणित दृढ़ विश्वास के साथ खारिज कर दें कि यह नाजायज है, क्योंकि आप जानते हैं कि ईश्वर पाप से अधिक बीमारी का लेखक नहीं है। आपके पास पाप या बीमारी की आवश्यकता का समर्थन करने के लिए उसका कोई कानून नहीं है, लेकिन आपके पास उस आवश्यकता को नकारने और बीमार को ठीक करने के लिए दिव्य अधिकार है।

17. 393 : 8-15

मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। इस ईश्वर प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें। अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6